गुरुकृपा

श्रीगुरु की कृपा के विषय पर शास्त्रों से उद्धरण

अद्वयतारक उपनिषद् से श्लोक

अद्वयतारक उपनिषद्, १७-१८

गुरुरेव परं ब्रह्म गुरुरेव परा गतिः।
गुरुरेव परा विद्या गुरुरेव परायणम्॥
गुरुरेव पराकाष्ठा गुरुरेव परं धनम्।
यस्मात्तदुपदेष्टाऽसौ तस्माद्गुरुतरो गुरुरिति॥

श्रीगुरु ही परब्रह्म हैं।
श्रीगुरु ही परम गति अर्थात् परम लक्ष्य हैं।
श्रीगुरु ही पराविद्या हैं।
श्रीगुरु ही परम आश्रय हैं।
श्रीगुरु ही पराकाष्ठा अर्थात् चरमोत्कर्ष हैं।
श्रीगुरु ही परम धन हैं।
श्रीगुरु उस तत्त्व का, परम आत्मा का
उपदेश व अनुभव प्रदान करते हैं,
अतएव श्रीगुरु सबसे श्रेष्ठ हैं, सबसे महान हैं।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।